



## पछात समाज सुधारक अने महीलामां शिक्षणना प्रणेता सावित्रीबाई फुले

दक्षाबेन आर. गोहिल<sup>1</sup>, डॉ. के. के. परमार<sup>2</sup>

<sup>1</sup>संशोधक, अनुस्नातक राज्यशास्त्र विभाग, सौराष्ट्र युनिवर्सिटी, राजकोट.

<sup>2</sup> प्रोफेसर अने अध्यक्ष, अनुस्नातक राज्यशास्त्र विभाग, सौराष्ट्र युनिवर्सिटी, राजकोट.

आधुनिक भारतनी सामाजिक क्रांतिना इतिहासमां महामानव ज्योतिराव फुलेनी समान तेमनी पत्नि सावित्रीबाई फुलेनुं पण महत्वपूर्ण स्थान छे. भारतनी सामाजिक क्रांतिना इतिहासनुं साचु मुल्यांकन करवु होय तो महामानव ज्योतिराव फुलेनी साथे साथे तेमनी पत्नि सावित्रीबाई फुलेनुं जीवन चरीत्रनुं स्वतंत्र अने योग्य भूमिका समजवी पडशे. आज सुधीनो संबंध मात्र फुलेनी पत्नि सुधीज समजवामां आवतो हतो. फुलेअे तेमनी पत्निने शिक्षित बनाव्या, अध्यापक बनाव्या अने त्यार बाद महात्मा फुलेअे स्थापित शाळाओमां शिक्षणनुं कार्य कर्युं. परंतु सावित्रीबाई महामानव फुलेना क्रांतिकारी आंदोलनमां साधारण योगदान आप्यु नथी. परंतु स्वयं ज्योतिबा फुलेना योगदानना संबधमां कहे छे के मारा जीवनमां जे कांइ कर्यु छे तेमा मारी पत्नि कारणभुत छे. "सार्वजनिक अंगीकार करनार १९मी सदीमां भारतीय मूळनिवासी महिला सावित्रीबाई फुले छे. १९मी सदीमां बुद्धिमान अने प्रतिभा संपन्न स्त्रीओमां पंडीत रमाबाईनो उल्लेख मल्यो छे. परंतु तेमना बे दशका पहेला जन्म लेनार सावित्रीबाई फुले कोइ पण प्रकारे कम न हता. मारा मानवा मुजब सावित्रीबाई फुलेनुं स्थान पंडीत रमाबाई करता पण श्रेष्ठ छे.



१९मी सदीमां पुना शहेर पाखंडी धर्म शास्त्रनो अडो हतुं. परंतु आ पुना शहेरमांथी महामानव ज्योतिराव फुलेअे पोताना क्रांतिकारी कार्य तथा आंदोलननुं केन्द्र बनाव्युं हतुं विद्या वगर कोइ पण प्रकारनो विकास शक्य नथी. आ वात जाणीने शुद्रो-अतिशुद्रो जातिओ अने नारी वर्गने शिक्षण आपवाना कार्यथी क्रांतिकारी आंदोलननी शरुआत करी. अने तेमा स्त्री शिक्षणने प्रधानता आपी. ज्योतिराव फुले प्रथम भारतीय हता के जेमनी पासे विशाळ द्रष्टि हती. महामानव ज्योतिराव फुलेनाशिक्षण कार्यथी सावित्रीबाई फुलेनी जीवन शैलीनो प्रारंभ साचा अर्थमा थयो छे. ज्योतीराव जेवी रीते आर्दश पति हता तेवी ज रीते आर्दश गुरु पण हता. सावित्रीबाई ज्योतिराव फुलेना जीवन अर्धांगीनी हता. ज्योतिराव धीरज, नीति, सर्पण भावना अने दीर्घ द्रष्टि धरावता हता. ज्योतिराव फुले जेवा ज असाधारण गुणो सावित्रीबाईमां पण हता. अने आ कारणोसर ज संसार, बाळको, घर जेवा संसारीक सुखोने त्यागीने सार्वजनिक जीवनमां पुर्ण रीते साथ आपी महात्मां ज्योतिराव सावित्रीबाईनी अने सावित्रीबाई ज्योतिरावनी प्रेरणा हता. पतिना कार्यमां भागीदार थता सावित्रीबाई खुबज प्रसन्न थता हता. अने सन्माननी भावना राखता सन्माननी भावना राखता समारंभमांभाग लेवा उपरांत साचा अर्थमां ज्योतिरावना आंदोलन अने विचारोनीसाथे सावित्रीबाई संपुर्ण रीते समर्पित हती. समाजना शोषित वर्गोना उत्थानमां बनेनी आस्था समान हती.

बंने दिवस रात्री आ ध्येय ने सफळ करवा माटे चिंतन अने चिंता करता हता. अेकबीजा साथे विचार विर्मस करता मित्र,साथीओ साथे चर्चा पण करता कोइ पण निर्णयनो अमल करवा माटे बंने समान रीते सदाय तत्पर रहेता.

आ उपरांत सावित्रीदेवी अने ज्योतिबा फुलेअे इस. १८४८मां सौ प्रथम कन्या शाळानी शरुआत पुनामां करी. आ दिशामां प्रथम पगलु भरीने तेओ आगळ वध्या. पण ते दिवसोमां समाजमां तेमनो खुब ज विरोद्ध थयो छता पण मककम रहीने अनेक दुःखोनो सामनो करीने पण शिक्षण आपवानुं चालु राख्युं अने त्यारबाद आ प्रवृत्ति अेमनी पुरा वेगथी चालु थइने जोत जोता मां तो १८४८ थी १८५२ सुधीमां तेमने बीजी १८ स्कुलो शरु करी. आम सावित्रीबाई फुलेअे शिक्षणमां जागृति तेमज हिंदु धर्ममां रहेल खोटा कुरीवाजो अने अस्पृश्यता निवारण तेमज पछात दलित महिलामां जागृति लावीने तेओने सामाजिक दरजजो अपाव्यो. आ क्रांति जोइने ते दिवसमां समाजनो मोटो वर्ग आ प्रवृत्तिनो विरोद्धी हतो पण तेओ शांतिपूर्वक हिंमतथी तेओ पोताना कार्यमां सतत प्रवृत्तिशील रहेता आ समयमां ज्यारे समाजमां रुढिच्युस्तता अने बंधनो खुबज आडा आवता त्यारे उपरवट चाली अनेक मुश्केलीओ दुःखो सहन करी तेमणे आ दिशामां नककर कार्य कर्नु हतुं. आवा प्रभावशाळी व्यक्तित्ववाळा नारी सावित्रीबाई फुलेनो जन्म ३-जान्यु. १८३९मां महाराष्ट्रना नाइ गाममां माळी ज्ञातिमां थयो हतो. तेमना पिताजी अने कुटुंबना लोकोते दिवसोमां लश्करी फोजमां अमलदार होवाथी तेमने मान अने आदर मळता आथी सावित्रीदेवीने पिताजीना संस्कार मुजब सत्य सामे निडरताथी लडवानी ताकात वारसामां मळी हती. आथी तेमनामां बाळपणथी ज समाज सेवाना गुणो रहेला हता अने समाजमां कांइक करी छुटवानी भावना धरावता सावित्रीबाईना लग्न मात्र १० वर्षनी उमरे ज्योतिबा फुले साथे थया हता. अने ज्योतिबा फुले तो जन्मथी ज समाजमां रहेता भेदभाव उच्चनीचना पाखंडो तेमज हिंदुधर्ममां रहेल खोटा कुरीवाजोना सखत विरोद्धी हतो. आथी बनेना विचारो अेक थवाथी तेओ खुबज शक्तिशाळी बन्या अने वैचारीक आंदोलनने वास्तविक रुप आपवानो सहीयारो प्रयास शरु कयो.

महामानव ज्योतिराव फुलेना क्रांतिकारी दरेक कार्यमां सावित्रीबाईअे महत्व पुर्ण भुमिका निभावी हती. त्यारनी सामाजिक स्थितिनी दष्टिथी जोतिबा फुले क्रांतिकारी विचारो तथा कार्योमां ते समयना लोकोथी घणा आगळ हता. आ विचारोनुं महत्व समजवे अेटलु आसान नहोतुं. परंतु सावित्रीबाईअे तेने साचा अर्थमां जाणी समजी अने तेना कार्यमां अेकरुप थइ गया हता. आ संदर्भमां सावित्रीबाई फुले भारतनी प्रथम कार्यकर हती. देशनी प्रथम समाज सेवीका हती. तेमनी सामाजिक पृष्ठभुमिने ध्यानमां राखीने तेमना कार्यने अभुतपुर्व कही शकाय.

ज्योतिराव फुलेनी शिक्षण संबंधी कार्यनी तमाम महत्वपुर्ण जवाबदारी संभाळी जे शाळामांशिक्षानी आवश्यकता जणाती त्या जइने कार्य करता अनाथ बाळकोनुं पालन पोषण कर्नु. अने अनाथबाळकोनी माता बनी.

भारतना इतिहासमां सावित्रीबाई जोतिबा फुलेनुं नाम अेक दलित समाज सुधारक महिलातरीके तेमज शिक्षणनुं महत्व समजावीने महीलाओमा केळवणीनुं ज्ञान सिंचन करी महीला शिक्षणना हीमायती तरीके छे.

तेओ अेक आर्दश महीला शिक्षक तरीके जीवनभर दलित समाजनी सेवा करी हती. अने आ जीवन नारी जागृति माटे तेमज समाजमां रहेली अंधश्रद्धा, कुरीवाजो, बाळ लग्न प्रथा, सतीप्रथा, विधवाओनुं मुंडन जेवा अनेक कुरीवाजो सामे अंतिमस्वास सुधी विरोध करीने नारी चेतना जगावी हती. तेथी नारी जगतमां आजे पण तेमनुं नाम आदरथी "क्रांतिजयोत" सावित्रीदेवी तरीके प्रसिद्ध छे. क्रांतिनी वात थाय त्यारे आजे सावित्रीबाई ज्योतिबा फुले दंपतिने केम भुली जवायउ

आ चुगले पोतानुं समग्र जीवन गरीब अने पछात वर्गोनी तमाम बहेनोना घरे घरे फरीने कन्या केळवणीनुं महत्व समजावीने महीला जागृतिलावी हती. अने तेओ आ रीते भारतना शिक्षिका तरीके पोतानी कारकीदी शरु करी जीवनभर कार्य कर्नु हतुं.

सावित्रीबाईअे आ काम केवा कपरा समयमां कर्नु छे. के ते ज्यारे घेरथी निकळे भणाववात्यारे तेना पर छाण,पत्थर फेकवामां आवता आ समये सावित्रीबाई कहेती हती "अरे मारा भाइओ मने प्रोत्साहन आपवा माटे तमने पत्थर नही पण मने फुलोनी वर्षा करीरहयो छो. इश्वर तमने वधु सुखी राखे" सावित्रीबाईनी आ स्मृति फुलेना आध्य चरित्र लेखक पंढरी सीताराम पाटीले सने १९३८ मां प्रकाशीत फुले चरित्रमां लख्यु छे के शाळानी सफळता

जोइ १५ मे १८४८मां पुना शहेरमां सगुणाबाई आ स्कुलमां अध्यापन कार्य करता हता. पाछळथी सावित्रीबाईअे भणाववानुं शरु कर्युं हतुं आ क्रांतिकारी कार्यमां शिक्षित सुधारावादी ब्राड्डणो तेमज मुस्लीम स्त्रीअे पण सहयोग आप्यो. आ मुस्लीम महीलानुं नाम फातिमा शेख हतुं. फातिमां ज्योतिबा फुलेना परम मित्र उस्मानखाननी बहेन हता. ज्योतिराव फुले ज्यारे तेमना पिताना कहेवाथी घर छोड्युं त्यारे उस्मानखाने पोताना घरे आश्रय आप्यो हतो. फुले दंपतिअे जे "निर्मल स्कुल" स्थापी हती. फातिमां शेखे अध्यापन प्रशिक्षण पुरु कर्युं हतुं. १६ मी सदीमां प्रथम अध्यापक फातिमां शेखने कही शकाय. आवा विपरीत समयमां अेकशुद्र व्यकित पोतानी पत्निने सुशिक्षित बनावे छे. आ कार्यमां तेमना वखाण जेटला करीअे तेटला ओछा छे.

आम समाजनो खुबज विरोद्ध सहन करीने तेमणे समाजनी परवा कर्या वगर तेमनी सामे जेहाद जगाडी अने दलित समाजमां जागृति लाववा अेक मशाल चिन्हना रुपमांआ दंपतिअे जीवनभर सेवानुं कार्य करी बताव्युं ते दिवसोमां खास करीने दलितपुरुष अने नारीओनी अवदशा जोइने समाजमां स्त्रीओनुं खुबज नीचली कक्षानुं अने पशु जेवु जीवन जीवती नारीनी दशा जोइने तेमनुं हदय खुबज ककळी उठतुं. अने तेमनुं आ दुःख जोइने तेओ कहेता के जो नारीमां जागृति लाववीहोय तो तेमने शिक्षण आपवुखुबज जरुरी बनशे. आम बंने पति-पत्निअे सौप्रथम कन्याशाळा स्थापीने शिक्षण आपवानुं काम सावित्रीबाईअेपोते उपाडी लीधुं आवा कपरा दिवसोमां आ सामाजिक क्रातिनुं समाज सेवीकानुं अध्यापकनुं तेमनुं काम अने समाज परिवर्तनना कामथी तेमनुं सन्मान तो थयुं नही पण तेमनो ठेरठेर विरोद्ध थवा लाग्यो पण तेओ मानता हता के समाजमां जो परिवर्तन लाववुं होय तो विकासके जागृतिलाववी हशे तो सौ प्रथम शिक्षणमां प्रगति करवी ज पडशे. अने जो कन्या केळवणी नही होयतो ते भावी पेढीने केवी रीते योग्य शिक्षण के दीशा बतावी शकशे.उ

आथी तेमने ते समय मां कन्या केळवणी खुबज महत्वनी छे समाजमां रहेल दुषणो दुर कया अने अति पछात, गरीब समाज माटे सतत लडता रहया. अनेक अवरोधोनो सामनो करी तेमने सेवाना काम अविरत कर्या. तेओ साहित्यकारी अने कुशल हता. तेमने अेक सत्यशोधक समाजनी रचना करी.

बाळ हत्या प्रतिबंधक गृहमां काशीबाई नामनी अेक ब्राहमण विधवाअे सने १८३' मां अेक अवैध बाळकने जन्म आप्यो आ बाळकने फुले दंपतीअे दतक लीधु तेनुं नाम यशवंत राख्युं सावित्रीबाईअे आ बाळकनी नाळ कापी हती. पालन पोषण करीने मोटो कर्यो. आगळ जता तेना विवाह कर्या. अने आ बाळक फुले दंपतिनो साचो बाळक बन्यो.

सने १८'—'मां महाराष्ट्रमां दुष्काळ पडयो खावा-पीवाना साधन सामग्रीना अभावे हजारो लोको मृत्यु पामता हता. सत्यशोधक समाज तरफथी जुदी जुदी जग्याअे अन्न पुर्ति क्षेत्रेनी शरुआत करवामां आवी. २३३३३३ निराश्रीत बाळकोनी खावा पीवानी सुवीधा करावी. २३३३३३ अेप्रिल १८'मां ज्योतिरावने पत्र लखी पोताना आ कार्यनी जाणकारी आपी हती. अंतिम लीटीमां तेमने जणाव्युं हतु के आप जे कल्याणकारी कार्य करी रहया छो तेमां सदैव हुं सहाय करी शकुं तेवी मारी इच्छा छे.

सावित्रीबाईअे ज्योतिराव फुलेना आंदोलन तथा क्रांतिकारी कार्योमां प्रत्येक स्तर पर महत्वपूर्ण भुमिका निभावी छे. परंतु फुलेना महत्वपूर्ण आंदोलनमां तेमनुं सौथी महत्वपूर्ण योगदान त्यारे मल्यु के ज्यारे पोताना पतिना अवसान बाद सत्यशोधक समाजनुं १८६१ थी १८६६' सुधी नेतृत्व कर्युं. सने १८६३मां पुनानी नजीक सासवडमां सावित्रीबाई फुलेनी अध्यक्षता हेठळ सत्यशोधक समाजनुं वार्षिक अधिवेशन पुर्ण थयुं ज्योतिरावना नजीकना सहयोगी महाघट पाटीले तेमनी स्मृति दिवसना प्रसंगे सने १८६९मां फुलेनुं प्रथम जीवन चरित्र प्रकाशित कर्युं. आ पुस्तक सावित्रीबाई फुलेने अर्पण करता कहयु के आजे ज्योतिबा आपणी वच्चे नथी तेमना कार्योनी संपुर्ण जवाबदारी जीवता हता त्यारे ज सावित्रीबाईअे संभाळी हती. आजे तेमना अवसान बाद सत्यशोधक समाजनी संपुर्ण जवाबदारी सावित्री बाईअे सारी रीते निभावी छे. तेओ मानवतानी उचांइनुं बिरुद केवा कपरा संघर्षमांथी पसार थइ पाम्या छे. ते तो आपणने तेना केटलाक कार्य परथी ज ख्याल आवे. जेवाके दलित समाज सुधारक महिला शिक्षणना प्रणेता उंचनीचना भेदभाव वगर दलितोना हमददी अध्यापक कवियत्री सेवानी देवीना आवा अनेकार्यने आजे आपणो केम भुली शकायउ

तेमना भव्य जीवन कार्यने आवडा नाना लेखमां समावानुं अशक्य छे. पण आ दलित महिलाना जीवननी पींखी आपणने थइ शके ते माटे नानकडो प्रयास कर्यो छे.



**दक्षाबेन आर. गोहिल**

संशोधक, अनुस्नातक राज्यशास्त्र विभाग , सौराष्ट्र युनिवर्सिटी, राजकोट.